International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(6): 149-152

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(6): 149-152
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 17-10-2024
Accepted: 21-11-2024

दिपाली बाहादुर
शोधार्थी, दिपाली बाहादुर
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर, मध्यप्रदेश, भारत

Corresponding Author:
दिपाली बाहादुर
शोधार्थी, दिपाली बाहादुर
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर, मध्यप्रदेश, भारत

समाज निर्माण का आधार: मातृशक्ति

दिपाली बाहादुर

सारांश
यह सर्वविदित एवं सर्वसम्मत है कि मातृशक्ति के बिना न केवल परिवार अपितु समाज एवं राष्ट्र का भी सुव्यवस्थित चल पाना असम्भव है। अर्थात् माता वृक्षरूपी समाज का बीजरुप है। और बीज को गलना पड़ता है तब जाकर वह एक स्वस्थ सुन्दर फलदार वृक्ष को जन्म देता है। उसी प्रकार सम्भवतः नारी के जीवन में नैरन्तर्येण संघर्ष बिना ही रहता है वह हर रूप में स्वयं को गलाती है। नित निरन्तर संघर्ष करती है, समाज के निर्माण के लिए, उसे परिपुष्ट करने के लिये । संसार प्रगतिशील है अतः स्त्रियों के कार्यक्षेत्र में भी प्रगतिशीलता है। अब वह समय नहीं रहा कि स्त्रियों को घर की चारदीवारी में कैद रखा जाए। घर की देखभाल करना स्त्रियों का मुख्य कार्य है आगे भी रहेगा। फिर भी उनका संबंध सीमित नहीं रखना चाहिए। विभिन्न परिस्थितियों के कारण उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता हो सकती है। प्राचीन काल से वर्तमान तक स्त्रियों जो कार्य कर रही है उसके विषय में जितना भी कहा जाये उतना ही कम होगा। झांसीरानी लक्ष्मी बाई, जोधाबाई, इन्दिरा गांधी, अपाला, लोपामुद्रा, मातगिनी, भगिनी निवेदिता, मदर टेरेसा आदि महिलाओं ने जो समाज के लिए किया वह आजीवन इतिहास में स्मरणीय है। नारी के बिना कोई कार्य सम्पूर्ण नहीं हो सकता। समाज निर्माण में मातृशक्ति की भूमिका अपरिसीम है। नारी पुरुष एक दूसरे से परिपूरक है। नारी के बिना जगत असम्पूर्ण है, सम्पूर्ण रूप में असम्भव है।

कुटशब्द: मातृशक्ति, नारीशक्ति, समाज, शिक्षा, समाज निर्माणे मातृशक्ति की भूमिका

भूमिका
विश्व की लगभग सभी सभ्यताओं के इतिहास का अध्ययन करने पर दिखाई देती है समाज निर्माण में मातृशक्ति का भूमिका क्या है? हम जितने प्राचीन काल की ओर आगे बढ़ेंगे, समाज में अनेक दृष्टियों से नारी का स्थान महत्वपूर्ण दृष्टिगोचर होता है। वैदिक काल की सामाजिक, धार्मिक व्यवस्था में ऐसे संकेत प्राप्त होते हैं कि इस काल खंड में महिलाओं की सामाजिक स्थिति प्रतिष्ठित थी। बौद्धिक एवं आध्यात्मिक जीवन में उन्हें पुरुषों के समान ही स्थान प्राप्त था। ऋग्वेद की मन्त्र दृष्टा ऋषिकाओं में लोपामुद्रा, विश्ववारा, घोषा, अपाला आदि विदुषी नारियां प्रमुख हैं। वैदिक काल में पुरुष अपनी पत्नी के साथ ही यज्ञ कर सकता था। "पत्नी के बिना जीवन अधूरा है।"[1] नारी हर समय हर परिस्थितियों में काम करने के लिए तैयार रहते है।

[1] शतपथ ब्राह्मण 5-2-1-11

चाहे वह खाना बनाने से पहाड़ों में चढ़ने तक। "स्त्री अबला नहीं, सबला है।"[2] जहां नारियों की पूजा होती हैं, वहां देवता का निवास होता है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवताः।"[3] जहां इनका आदर नहीं होता या इनका अपमान होता है, वहां सारे धर्म, कर्म, निष्फल हो जाता है। नारी के अपमान से महाभारत हुआ था। अर्थात् नारी को सम्मान करना आवश्यक है। जो अपने परिवार को कल्याण चाहते हैं, वे स्त्रियों का सदा सम्मान करें।

विषयवस्तु विन्यास

मनुष्यों का ऐसा समूह जिसमें सभी व्यक्तियों के बीच पारस्परिक संबंध हो, सहयोग की भावना हो, उसे समाज कहा जाता है। समाज के अन्तर्गत लोग सामाजिक विकास हेतु एवं सामाजिक समस्या को दूर करने हेतु मिलकर काम करते हैं। समाज का निर्माण तब होता है जब कई लोग आपसी संबंध के आधार पर लोग आपस में जुड़े रहते हैं। मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज ओ सामाजिक जीवन मानव का स्वभाव है। इस प्रकार समाज मानव के साथ साथ चलता है मानव से ही समाज है। अतः समाज मनुष्य में निहित हैं। अपनी आवश्यकता के आधार पर मनुष्य अपने समाज का निर्माता होता है। समाज निर्माण में मातृशक्ति का भूमिका अपरिसीम होती है। नारी के बिना कोई कार्य सम्पूर्ण होना असम्भव हैं। नारी प्रकृति का एक अनोखी सृष्टि है। नारी धरती स्वरूप होती हैं यहीं से वृक्षरूपी समाज सर्जन होता है। नारी में उत्पादन करने की शक्ति निहित हैं। प्राचीन काल से वर्तमान काल तक सृष्टि की आधारशीला नारी ही है। वेदों में नारी का गौरवपूर्ण स्थान है। 'नारी समाज में अग्रणी हैं।' 'नारी शील, राष्ट्रीय रक्षा तथा कर्तव्य की खान है।' अर्थात् वेदों में नारी की शिक्षा, शील, गुण, कर्तव्य और अधिकारी का विशद वर्णन है। वैदिक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतवर्ष के समाज निर्माण में नारियों को बहुत गुरुत्वपूण स्थान है। स्त्रियां राजनीतिक, सामाजिक, तथा प्रशासनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती प्रत्येक महापुरुष के मूल में किसी न किसी नारी की ही भूमिका होती हैं। पण्डित ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, राजाराममोहन राय, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, आईनस्टीन, न्यूटन, आदि महापुरुषों का जन्म नारी से ही हुआ है। प्राचीन काल से वर्तमान काल तक सृष्टि की आधारशीला नारी ही है।

स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि 'वहीं देश स्थान दिया जाता है तथा उनकी शिक्षा का भी उचित उन्नति कर सकता हैं। जहां स्त्रियों को उचित प्रबंध किया जाता है।'

जवाहरलाल नेहरू ने भी कहा था कि 'लड़के की शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है, किन्तु एक लड़की की शिक्षा सारे परिवार की शिक्षा है।'

शिक्षा और समाज का प्रगाढ़ सम्बन्ध है। जब से मानव का सृष्टि पर प्रादुर्भाव हुआ उसी समय से शिक्षा और समाज का प्रारंभ हुआ मनुष्यों के पारस्परिक संबंधों की व्यवस्था को समाज कहा जाता है। शिक्षा जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त चलने वाली गत्यात्मक प्रक्रिया है। जिसका कार्य क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। शिक्षा व्यक्ति में वह योग्यता विकसित करती है जिससे वह परिस्थितियों के अनुरूप अपने जीवन, समाज तथा राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके। शिक्षा जिसका उददेश्य ही व्यक्ति की शारीरिक मानसिक और आत्मिक उर्जा का विस्तार करना है, उसका विकास मात्र उत्तम शिक्षा से ही सकता हैं। शिक्षा मानव जीवन का आधार स्तम्भ है। इसके अभाव में जीवन के विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। यह मानव जीवन की सर्वोत्कृष्ट एवं उच्चता का प्रतीक है। पुरातन काल से ही शिक्षा को आत्मज्ञान एवं आत्मप्रकाश का साधन माना गया है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि शिक्षा मानव के जीवन को सार्थक बनाती हैं। मानव सभ्यता के क्रमिक विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा वह सम्बल है जिसके आधार पर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का सर्वांगीण विकास निर्भर करता है। यह मानव की आकांक्षाओं को जगाती है एवं उसे पूरा करने में सहायता प्रदान करती है। यह मानव को उसके अतीत से परिचित कराती है, वर्तमान में जीवन जीने की कला सिखाती है एवं भविष्य का निर्माण करने की क्षमता प्रदान करती है। 'दार्शनिक दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा मनुष्य में जीवन के उद्देश्य को समझने एवं प्राप्त करने की योग्यता प्रदान करती है।' सामाजिक दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा मनुष्य को समाज में व्यवस्थित एवं अनुशासित होकर रहना सिखाती है। कहने का आशय यह कि शिक्षा मनुष्य का समाजीकरण करती है। राजनैतिक दृष्टि से शिक्षा मनुष्य को देशभक्ति सिखाती है एवं श्रेष्ठ सामाजिक नागरिक बनने में मदद प्रदान करती है। आर्थिक दृष्टि से शिक्षा मनुष्य में उद्योग की स्थापना एवं उनका कुशल संचालन करने की कला का विकास करती है। जिससे सम्पूर्ण समाज का आर्थिक विकास होता है व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का विकास करती है। उसकी मानसिक गतिविधियों, उसकी भाव प्रवणता ग्रहण करने की शक्ति आदि का विकास करती है।

[2] अथर्ववेद 20-16-9

[3] मनुस्मृति 3/59

वेदों में नारी का गौरवपूर्ण स्थान है। वेदों में नारी की शिक्षा, शील, गुण, कर्तव्य और अधिकारी का विशद वर्णन है। इस प्रकार का वर्णन सम्भवतः संसार के किसी भी धर्मग्रंथ में नहीं है। चारों वेदों में सैकडों नारी विषयक मन्त्र दिये गए हैं, जिनसे स्पष्ट होना है कि वैदिक काल में नारी का समाज में विशेष स्थान था। तथा पुरुषों की भांति उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में बराबर का स्थान प्राप्त था। वैदिक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतवर्ष के समाज में नारियों को बहुत गुरुत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। स्त्रियों की शिक्षा दीक्षा की उत्तम व्यवस्था थी। स्त्रियां राजनीतिक, सामाजिक तथा प्रशासनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं।

"नारी समाज में अग्रणी हैं।"[4]
"नारी शील, राष्ट्रीय रक्षा तथा कर्तव्य की खान है।"[5]
"स्त्री अबला नहीं, सबला है"[6]

'ऋग्वेद में 24 और अथर्ववेद में 5 वैदिक विदुषियों का उल्लेख है।' वेदों में नारी के गौरव का अनेक प्रकार से वर्णन है ।
स्वामी दयानंद जी का कथन हैं 'राष्ट्र, समाज, प्रशासन, तथा परिवार के क्रिया-कलाप तब तक स्त्रियों को कार्यक्षेत्र में प्रगतिशील नही बना सकते जब तक उन्हें घर की देखभाल करने की वस्तु मात्र न समझकर उचित शिक्षा न दे दी जाय।'
संसार प्रगतिशील है। घर की देखभाल करना स्त्रियों का मुख्य कार्य है और आगे भी रहेगा। फिर भी उनका संबंध सीमित नहीं रखना चाहिए। विभिन्न परिस्थितियों के कारण उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता हो सकती है भारतीय जीवन को विकसित बनाने के लिए स्त्रियों को विभिन्न प्रकार से कार्य करना पड़ता है। ऐतिहासिक युग से नारी का देश के लिए आत्मत्याग दिखाई देता है। झांसीरानी लक्ष्मी बाई, जोधाबाई, आदि नारी का नाम स्मरणीय है। देश या समाज मातृस्वरूप होता है। इसलिए हम अपने देश को भारत माता कहते हैं। नारी के बिना किसी समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते। सृष्टि का उद्यम स्थल यदि न रहे तब कैसे समाज का निर्माण होगा? नारी मनुष्य या देवी, प्रत्येक रुप में सम्माननीय होती है। माता बच्चों को आगे चलने का मार्ग दिखार्ती है। समाज निर्माण में भी सहायक होती है। समाज निर्माण में भी सहायक होती है। संसार में ऐसा कोई भी काम नहीं जिसमें नारी का कोई अवदान न हो। प्राचीन काल से वर्तमान तक नारी शक्ति की प्रतिमूर्ति रही हैं। प्रेम और समर्पण, उदारता, गुणों से परिपूर्ण होती है नारी चरित्र। करुणा और धैर्यशीलता का प्रतीक रूप सीता चरित्र है। प्रेम और समर्पण का प्रतीक है राधा। शक्ति के प्रतीक रूप में देवी दुर्गा, पार्वती आदि है। भारत को सुशिक्षित पत्नीयों तथा माताओं की आवश्यकता है, गृहस्थी के निपुण एवं सौम्य शासक की आवश्यकता है, पतियों के मददगार सलाहकार की आवश्यकता है तथा मात्र शिक्षित स्नातकों के बजाय रोगियों के लिए कुशल नर्स (परिचारिका) की जरूरत है। एक स्वस्थ पीढ़ी के निर्माण की सारी जिम्मेदारी स्त्री के ऊपर है। जन्म से पूर्व किसी बच्चे के शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक विकास की जरूरतों को एक समझदार मां ही समझ सकती है। वह अपने बच्चे की छवि को आशाजनक रूप से सुन्दर से सुन्दरतम बनाने का प्रयास करती हैं। मां वह एक व्यक्ति है जो बिना देखे निःस्वार्थ भाव से प्यार करती है। राष्ट्रीय जीवन में भारतीय स्त्री का स्थान श्रेष्ठतम था इसलिए सरोजिनी नायडू की उक्ति है कि 'याद रखिए जो हाथ पालना झुलाते है वहीं निर्माण करते हैं और वहीं कोमल हाथ राष्ट्रीय जीवन का प्रमुख कारक है' नारीवादियों की जो दूसरी पीढ़ी आगे आई उनमें से अनेक समाज सुधारक अपनी माताओं से प्रभावित थी। सुश्री लज्जावती की मां ने अपने आसपास की स्त्रियों के साथ मिलकर विद्यालय चलाया। जिस प्रकार कमला देवी की पढ़ाई में रुचि न होने के बावजूद उनकी मां ने उन्हें विद्यालय जाते रहने के बावजूद उनकी मां ने उन्हें विद्यालय जाते रहने या स्कुल में बने रहने की हिदायत दी, ठीक उसी प्रकार सुश्री लज्जावती की मां ने भी उनके विद्यालय जाने पर बल दिया।

उपसंहार

महिलाएं पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम करती रही हैं। वे खेतों निराई गुड़ाई से लेकर कटाई तक का काम करती है। पशुओं को दाना पानी देती है। दुध दुहती है। पहाड़ी क्षेत्रों में स्त्रियों मीलों दूर पानी लाने जाती हैं। चूल्हा जलाने के लिए जंगल से लकड़ियां इकट्ठी करती है। घर का सारा काम भी करती हैं। उनका किया गया श्रम दिखाई नहीं पड़ता हैं। नारी पुरुष के बराबर शारीरिक रूप से भले पुष्ट न हो मगर पुरुष के समान कार्य करने में सक्षम है। नारी घर के कार्य करने में सक्षम हैं। नारी को घर के कार्य को संभालने के साथ-साथ उन्हें दफ्तर का कार्य भी देखना पड़ता हैं। सुबह के वक्त जब और लोग सोते रहते हैं तब नारी अपनी ज़िम्मेदारियां निभाती हुई घर के काम को पूरा कर दफ्तर के लिए तैयार होती हैं। नारी तो एक साथ

[4] ऋग्वेद 10/159/2
[5] अथर्ववेद 5/17/13
[6] अथर्ववेद, 20/16/9

दोनों काम करती है, एक परिवार के प्रति अर्थात् समाज निर्माण करने में सहायता करती हैं। मातृत्व की रक्षा करने के लिए लिंग के प्रति भेदभाव दूर करना पड़ेगा। बच्चों को संभालना नारी-पुरुष दोनों का ही कार्य होता है। इस प्रकार हम समाज में देखते हैं कि नारी प्रत्येक कर्म करने में हर परिस्थिति में अपने को सजग रखने में तथा हर परिस्थिति का सामना करते हुए अपने को निरन्तर गतिशील और कर्तव्य निष्ठ बनाये रखने में सदैव तत्पर रहती हैं। उसके मातृत्व शक्ति की कल्पना कर पाना असम्भव है। इसीलिए वह सतत् पूजनीया है।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

1. भारत में नारी शिक्षा, अग्रवाल जे सि., विद्या विहार, नई दिल्ली। 2009 ।
2. स्त्री संघर्ष का इतिहास, कुमार राधा, वानी प्रकाशन। 2002 ।
3. महिला एवं कानून, मेहता चेतन, आशीष पब्लिशंग हाऊस। 1996 ।
4. महिलाओं के मौलिक अधिकार, शर्मा रमा & मिश्रा एम. के.।
5. नारी अस्तित्व की पहचान, बालकृष्णन डॉ सुधा, वानी प्रकाशन।
6. नारी उत्पीड़न और कानून, पवार डॉ मीनाक्षी, डॉ निकुंज, निकुंज प्रकाशन, साईनाथ कालोनी, बड़वानी।
7. समान नागरिक संहिता महिलाओं की स्थिति, चन्सोरिया दिव्या, सिंह किरन, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन। 2008 ।
8. महिलाओं में अधिकारों के प्रति चेतना, शर्मा सुरेन्द्र कुमार, आर.बी.एस. ए. पब्लिशर्स, जयपुर। 2010 ।